एहसास के रंग

बुनियाद हुसैन 'ज़हीन'

इंतिसाब

दादाजान मरहूम चौधरी रशीद अहमद साहब
के नाम
जिनकी पुर-ख़ुलूस दुआएं आज
भी मेरे साथ हैं

बड़ी खुशी की बात है कि बुनियाद हुसैन 'ज़हीन' का शे'री मजमूआ 'एहसास के रंग' आप के रू-ब-रू है। जनाब दीन मोहम्मद 'मस्तान' के बाद ज़हीन इस महल्ले का दूसरा ख़ुशनसीब शाइर है जिस का मजमूआ मंज़रे-आम पर आया है।

अजीब इत्तेफ़ाक़ की बात है कि 'ज़हीन' की पैदाइश से 1 साल पहले मस्तान साहब ने इस का नाम बुनियाद हुसैन तजवीज़ किया था बाद में जनाब मोहम्मद हनीफ 'शमीम' जो कि जा-नशीने-मस्तान है, 'ज़हीन' तख़ल्लुस उन्हीं का अताकर्दा है।

मैंने तक़रीबन पचास साल तक मुतवातर बहारिया, ना'तिया और सलाम के मुशाइरों की निज़ामत की है। चौधरी रशीद अहमद साहब और रफ़ीक़ अहमद 'रफ़ीक़' साहब का बराबर तआवुन हासिल रहा। चौधरी साहब के ज़िम्मे मुशायरे के स्टेज, रिकार्डिंग, लाइटिंग और साउण्ड सिस्टम का काम था जिसे वो बख़ूबी अन्जाम दिया करते थे। अब यही काम 'ज़हीन' के वालिद चौधरी आबिद हसन अन्जाम देते हैं।

मेरी दुआ है कि 'एहसास के रंग' को अवाम और ख़्वास में मक़बूलियत हासिल हो, आमीन।

— अमीनुद्दीन

सद्र, मस्तान एकेडमी
सरपरस्त, जश्ने-ईदे-मीलादुन्नबी
व बज़्मे-मसालमा
महल्ला भिश्तियान, बीकानेर

बातें सबको बनाना आती हैं। बात करना एक हुनर है फिर भी दुःख-दर्द का एहसास किसे नहीं होता! राहतो-इम्बिसात से भी कमो-बेश हर शख़्स का साबिक़ा पडता है, कोई भी ज़ी-रूह इन मुहर्रिकात या अवारिद से ना-आशना नहीं है, जज़्बात या एहसासात का इज़्हार फूहड़ से फूहड़ अल्फ़ाज में भी किया जा सकता है। बच्चों की तुतली बोली भी सुनने वालों के दिलों में शफ़क़तें पैदा कर सकती है, लेकिन शाइरी के क़ायदे-क़ानून की जानकारी हासिल करना और उन्हें निबाहना शायद दुनिया का सख़्ततरीन मरहला है। शे'र कहना हर-कसो-नाकस के बस का काम नहीं है, हर वो इंसान जो अपने पहलू में दिले-हस्सास रखता है उसे शे'र सुनने में लुत्फ़ आता है, उस पर एक सरमदी कैफ़ीयत तारी होती है जो उसे अपनी अस्ल से, अपनी ज़ात से वाक़िफ़ करवाती है। उसे लगता है जैसे वो अपने-आप से बतिया रहा है।

शाइरी क्या है इसकी वजाहत हर दौर के दानिश्वर अपने-अपने ढंग से करते आये हैं, नजरिया सबका जुदागाना है। मैं इस बखेड़े में नहीं पड़ना चाहता कि शाइरी का जन्म कब, कहां और कैसे हुआ? दुनिया में आज जो हज़ारों ज़बानें बोली जा रही है उनके वजूद में आने से पहले भी शाइरी की जाती थी। इब्रानी, लातीनी और यूनानी जबानें दुनिया की सबसे पुरानी ज़बानें मानी जाती है, शे'र इनमे भी कहे जाते थे।

शाइरी ज़िन्दगी में घुली हुई होती है और ज़िन्दगी जीने का सलीक़ा भी सिखाती है। ये किसी ख़ास तबक़े, क़बीले, क़ौम या मजहब की विरासत नहीं है। शाइरी जोशो-जज़्बात का एहसासात की सतह पर नोए-इन्सानी को एक रूहानी रिश्ते में पिरोने का काम करती है।

बुनियाद हुसैन 'ज़हीन', मिस्त्री आबिद हसन के साहबजादे और मेरे बुज़ुर्ग दोस्त चौधरी रशीद अहमद के पोते है। 'ज़हीन' के मजमूअए-कलाम का मुसव्वदा आया है जो गजलियात पर मुश्तमिल है साहिबे मुसव्वदा बुनियादी तौर पर ज़हीन है। बुनियाद हुसैन को 'ज़हीन' तख़ल्लुस 'शमीम' बीकानेरी (जा-नशीने-मस्तान) का अताकर्दा है जो उनकी ज़हानत की दलील है। होनहार बिरवा के चिकने-चिकने पात मुझे इसके बचपन ही से

महसूस हो रहा था कि ये एक दिन शाइरी करने लगेगा। ऐसे इम्कानात मुझ पर उजागर होने की कई वजूहात हैं।

चौधरी रशीद अहमद मेरे बुजुर्ग दोस्तों में से थे, जो 'ज़हीन' के जद्दे-अमजद थे। अपने काम से फ़ुर्सत मिलने के बाद ज़ियादातर वक़्त मस्तान साहब के साथ गुजारते थे। शे'रो-सुखन की महफिलों में बराबर शरीक होते थे और उनके छोटे भाई रफीक़ अहमद 'रफीक़' माशा अल्लाह शे'र गोई की भरपूर इस्ते'दाद के मालिक थे, आज उनके साहबजादे ज़ाकिर 'अदीब' का शुमार राजस्थान के अच्छे शाइरों में होता है।

मिस्त्री आबिद हसन यानी ज़हीन के वालिदे-मुहतरम ब-ज़ाते ख़ुद शाइर नहीं हैं लेकिन पिछले 25 साल से मदीना मस्जिद महल्ला भिश्तियान के पिछले चौक में जहां 70 साल से मुसलसल मुशाइरे हो रहे हैं, जो 'मुशाइरा चौक' के नाम से मशहूर है, वहां साल में कई छोटे-बड़े मक़ामी, ऑल राजस्थान और ऑल इण्डिया मुशाइरों का इन्अिक़ाद इन्हीं साहब की अदबी ख़िदमात व तआवुन से होता आ रहा है। शाइरों की इज़्ज़त-अफ़ज़ाई और उनकी ख़ातिर-मदारात में कोई कसर नहीं छोड़ते। अदब नवाज़ तो है ही अक्सर शो'अरा इन्हें शाइरगर कहते हैं। सैकडों मुशाइरों की विडियो और ऑडियो केसेटों से इनका कमरा अटा पड़ा है, सारी मशीनों और कम्प्यूटर वग़ैरह से आज भी इन तमाम मुशाइरों और शाइरों को देखा व सुना जा सकता है। गोया ये कमरा, जिसमें बीकानेर तशरीफ़ लाने वाले शो'अरा-ए-किराम अपनी पहली हाजिरी दर्ज करवाते हैं, ये कमरा अदबे-लतीफ (शाइरी) के लिये ही वक़्फ है।

मुतजक्करा सद्र माहौल के पसमंजर में 'ज़हीन' की परवरिश हुई है तो वो शाइर न होते तो और क्या होते! पिछले कई सालों में ज़हीन कई मुशाइरे बीकानेर, सीकर, चूरू, फतेहपुर, झुंझुनू, नागौर, बासनी, अजमेर, जोधपुर, नजीबाबाद (उ प्र.), बीकानेर आकाशवाणी, जयपुर दूरदर्शन और ई. टी वी. उर्दू वग़ैरह मक़ामात पर पढ़ चुके है। तहत और तरन्नुम, दोनों में ख़ूब झूम कर और जम कर पढते है, नीज दादो-तहसीन से नवाज़े जाते हैं। ख़ुशक़िस्मती से जा-नशीने-मस्तान शमीम बीकानेरी जैसे शफ़ीक़ नुक्ता-सन्ज उस्ताद की रहनुमाई हासिल है। ज़हीन को संवारने, निखारने व उसे फ़ने-लतीफ़ की बारीकियों, गहराइयों, गीराइयों, शाइराना सदाक़तों और इर्तिक़ाई मरहलों से भरपूर जानकारी करवाने में शमीम साहब की मेहनतों की जितनी तारीफ की जाये कम है।

'मा लहू व मा अलैह' जैसा कि मैं पहले अर्ज़ कर चुका हूं कि शाइरी के मरहलों से पार पा लेना, उसकी क़वाइद और उरूज़ी पाबन्दियों को समझ लेना, बच्चों का खेल नहीं है। ज़हीन का ये पहला शे'री मजमूआ है। अस्क़ाम की गुन्जाइश असातिज़ा के कलाम में भी हो सकती है, ये मजमूआ 'एहसास के रंग' शे'री ऐ'बों से पाक और रवां-दवां है, ज़बान सादा व सलीस है, उफनते जज़्बों, बुलन्द हौसलों और बेबाकियों की नुमाइन्दगी करते है इनके अशआर। जदीदियत और मावादुल जदीदियत के मा'नी और मफ़हूमो-मक़ासिद से मैं ख़ुद पूरी तरह वाक़िफ़ नहीं हूं इसलिये ये तरक़्क़ी या तनज़्ज़ुली के कौन से मरहले में हैं ये नहीं कह सकता। अलबत्ता मुझे ज़हीन के कलाम में जा-ब-जा नुदरत भी नज़र आती है और जाइज़ हद तक जिद्दत भी, वो अपने अहवालो-ज़ुरूफ़ की भरपूर नुमाइन्दगी करता है उसकी बेबाकी कभी-कभी हदों का तजावुज़ करती है। मेरा ये मशवरा है कि जब वो गुफ़्तगू करे या शे'र पढ़े तो हिफ़्ज़े-मरातिब का पूरा ख़याल रक्खे।

'ख़ता-ए-बुज़ुर्गा गिरफ़्तन ख़ता अस्त'

इन्हें नगर विकास न्यास, बीकानेर की जानिब से यौमे-जमहूरिया (गणतन्त्र दिवस) के मौक़े पर ऐ'ज़ाज से नवाज़ा जा चुका है व राजीव गांधी यूथ फेडरेशन की जानिब से 'बीकानेर रत्न अवार्ड' और छोटी-बड़ी तन्ज़ीमों, शख़्सीयत व इदारों से नवाज़ा जा चुका है। बीकानेर की अवाम व ख़ुसूसन नौजवान तबक़ा शाइरों और कवियों की बड़ी इज़्ज़त करता है। इनका पुर-ख़ुलूस प्यार ज़हीन को भी हासिल है। वो ज़हीन की भरपूर हौसला-अफ़्ज़ाई करेगा, उसे मुहब्बतों और दादो-तहसीन से नवाज़ता रहेगा इसकी मुझे पूरी उम्मीद है। इस मजमूए की भरपूर पज़ीराई हो इसे क़ुबूले-आम हासिल हो।

इसी दुआ के साथ—
अहमद अली ख़ां 'मन्सूर' चूरूवी

15 अप्रैल, 2008

मदीना मस्जिद के पीछे मुशाइरा चौक महल्ला भिश्तियान में साल में तीन-चार मनाअ्ते, मसालमे और बहारिया मुशाइरे कई सालों से मुनअक़िद होते रहे है और ये सिलसिला बदस्तूर जारी है।

बुनियाद हुसैन 'ज़हीन' इस माहौल से मुतअस्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सके और शे'र गोई का शौक़ रफ्ता-रफ्ता दिल में पलता गया। मस्तान एकेडमी की जानिब से एक कुल हिन्द मुशाइरा इन्अिक़ाद पज़ीर हुआ जिस में मुल्क के नामवर शो'अरा-ए-किराम ने शिर्कत फ़रमाई जिन में जनाब 'मन्सूर' चुरूवी साहब, जनाब शीन काफ़ निज़ाम साहब और जनाब मख़मूर सईदी साहब के नाम क़ाबिले-जिक्र हैं। इसी मौके पर ज़हीन ने कुछ अशआर कहे, मुझे सुनाए और मुशाइरे में पढ़ने की इजाजत तलब की। जब मुशाइरे में पढ़ा तो सामईन ने ख़ूब पजीराई की और दादो-तहसीन से नवाज़ा और उसी दिन चौधरी आबिद हसन ने ज़हीन को मेरे सुपुर्द कर दिया कि मै उसकी रहनुमाई करूं। इन्कार की कोई गुन्जाइश न थी, चूंकि मौसूफ़ ने जो मेहनत मेरे बिखरे हुए कलाम को इकट्ठा करने में की वो शायद हर किसी के बस की बात नहीं थी। लिहाजा मैने अपना अख़लाक़ी फ़र्ज़ समझते हुए ज़हीन को अपना लिया। जहीन ने 'एहसास के रंग' में क्या कहा है, कैसा कहा है इस पर मैं कोई तब्सरा नहीं करूंगा क्यूंकि ये काम मैंने क़ारईन के सुपुर्द कर दिया है और फ़ैसला भी उन्हीं पर छोडता हूं। लेकिन इतना ज़रूर कहूंगा कि अगर क़ारईन को इस मजमूए में कुछ अशआर भी पसन्द आ जायें तो इस होनहार शाइर के लिये दुआ फ़रमायें।

'एहसास के रंग' बुनियाद हुसैन 'जहीन' के शे'री सफर की शुरुआत है। इस दौरान जो अशआर उसने कहे हैं उन में उसका अपना लबो-लहजा है। शाइरी बच्चों का खेल नहीं है, ये बहुत मुश्किल फ़न है और इस फ़न को पूरी मेहनत दरकार है बक़ौल मीर अनीस—

सैकड़ों मन तने-शाइर का लहू होता है
तब नज़र आती है इक मिसर-ए-तर की सूरत

इसलिये मेरा मशवरा है कि ज़हीन ख़ूब मुतालिआ करे चूँकि मुतालिआ ही शाइरी को सजाता है, संवारता है और निखारता है, ज़हीन के लिये ये अशद ज़रूरी है कि वो पुराने असातिज़ा के कलाम और मौजूदा दौर के शाइरों के कलाम का वग़ौर मुतालिआ करते हुए अपना शे'री सफ़र जारी रक्खे और शाइरे-मशरिक़ अल्लामा इक़बाल का ये शे'र अपने ज़हन में रक्खे—

सितारों से आगे जहा और भी हैं
अभी इश्क़ के इम्तिहां और भी है

दुआ गो
शमीम बीकानेरी
जा-नशीने मस्तान

14 जून, 2008

ज़हीन की शे'री ज़हानत

बुनियाद हुसैन 'ज़हीन' बीकानेर की सरज़मीन से उभरने वाले जवां साल शाइर हैं। उन्होंने मुहम्मद हनीफ 'शमीम' बीकानेरी की रहनुमाई में अपने शे'री सफर का आगाज़ किया और शाइराना ज़ौक़ और तख़लीक़ी-इनहिमाक के बाइस इस राह में तेजी से गामज़न हैं यही वज्ह है कि बहुत कम अरसे में इतना शे'री सरमाया वजूद में आ गया कि मजमूआ तरतीब दिया जा सके।

ज़ेरे-नजर मजमूआ गजलियात पर मुश्तमिल है अगरचे इसके आलावा दीगर असनाफ में भी तब्अ-आज़माई करते है मगर ग़जल से उन्हें खास लगाव है अगरचे अभी ज़हीन के शे'री सफर की इब्तिदा है और ये मजमूआ भी इस बात का शाहिद है, मगर उनकी तख़लीक़ी ज़हानत, मश्क़ो-मुतालिआ और ग़ौरो-फ़िक्र से इनका फ़न पुख़्तगी से ज़रूर हमकिनार हो सकेगा और वो अपने तख़य्युल की ताज़ाकारी, तजरिबे और मुशाहिदे की रंगा-रंगी से अपनी शे'री कायनात को वुसअत-आशना बना सकेंगे। जहीन जिस अंदाज़ में शे'र कह रहे है उससे लगता है कि ये नौजवान शाइर बीकानेर की अदबी हुदूद में क़ैद रहने वाला नहीं है, वो अपने अह्द के शे'री रुजहानात से किसी न किसी तौर वाबस्ता है इसीलिये तो रिवायती अशआर के साथ वो नये लबो-लहजे के अशआर कहने की तरफ भी माइल नजर आते हैं। मसलन ये अशआर मुलाहिज़ा हो—

ज़मीन पर हैं क़दम ख़्वाब आस्मान के है
शिकस्ता पर हैं मगर हौसले उडान के है

महफ़ूज अब नहीं हैं चरागों के क़ाफिले
तेवर बदलते वक़्त की पागल हवा के देख

मुश्किलें जिन्दगानी की आसां हुई
वक़्त जीने का ऐसा हुनर दे गया

इसलिये मेरा मशवरा है कि ज़हीन ख़ूब मुतालिआ करे चूँकि मुतालिआ ही शाइरी को सजाता है, संवारता है और निखारता है, ज़हीन के लिये ये अशद ज़रूरी है कि वो पुराने असातिज़ा के कलाम और मौजूदा दौर के शाइरों के कलाम का बग़ौर मुतालिआ करते हुए अपना शे'री सफ़र जारी रक्खे और शाइरे-मशरिक़ अल्लामा इक़बाल का ये शे'र अपने ज़हन में रक्खे—

सितारों से आगे जहां और भी हैं
अभी इश्क़ के इम्तिहां और भी हैं

दुआ गो
शमीम बीकानेरी
जा-नशीने मस्तान

14 जून, 2008

ज़हीन की शे'री ज़हानत

बुनियाद हुसैन 'ज़हीन' बीकानेर की सरज़मीन से उभरने वाले जवां साल शाइर हैं। उन्होंने मुहम्मद हनीफ़ 'शमीम' बीकानेरी की रहनुमाई में अपने शे'री सफर का आगाज़ किया और शाइराना ज़ौक़ और तख़लीक़ी-इनहिमाक के बाइस इस राह में तेज़ी से गामज़न हैं यही वज्ह है कि बहुत कम अरसे में इतना शे'री सरमाया वजूद में आ गया कि मजमूआ तरतीब दिया जा सके।

ज़ेरे-नज़र मजमूआ ग़ज़लियात पर मुश्तमिल है अगरचे इसके आलावा दीगर असनाफ में भी तब्अ-आज़माई करते हैं मगर गजल से उन्हें खास लगाव है अगरचे अभी ज़हीन के शे'री सफर की इब्तिदा है और ये मजमूआ भी इस बात का शाहिद है, मगर उनकी तख़लीक़ी ज़हानत, मश्क़ो-मुतालिआ और ग़ौरो-फ़िक्र से इनका फ़न पुख्तगी से ज़रूर हमकिनार हो सकेगा और वो अपने तखय्युल की ताजाकारी, तजरिबे और मुशाहिदे की रंगा-रंगी से अपनी शे'री कायनात को वुसअत-आशना बना सकेंगे। ज़हीन जिस अंदाज़ में शे'र कह रहे है उससे लगता है कि ये नौजवान शाइर बीकानेर की अदबी हुदूद में क़ैद रहने वाला नहीं है, वो अपने अह्द के शे'री रुजहानात से किसी न किसी तौर वाबस्ता है इसीलिये तो रिवायती अशआर के साथ वो नये लबो-लहजे के अशआर कहने की तरफ़ भी माइल नजर आते है। मसलन ये अशआर मुलाहिज़ा हों—

ज़मीन पर हैं क़दम ख्वाब आस्मान के हैं
शिकस्ता पर है मगर हौसले उड़ान के हैं

महफ़ूज़ अब नहीं है चरागों के क़ाफिले
तेवर बदलते वक्त की पागल हवा के देख

मुश्किलें ज़िन्दगानी की आसां हुईं
वक़्त जीने का ऐसा हुनर दे गया

मुयस्सर न आई थी ता'बीर जिसकी
वही ख्वाब फिर देखना चाहता हूं

छोड़ कर उड़ गये सभी पंछी
कितना मायूस है शजर देखो

इन अशआर में अपनी ज़ात और गिर्दो-पेश के मसाइल को पैकर अता करने की अच्छी कोशिश नज़र आती है। अगर ज़हीन इसी तरह तख़लीक़ी सरगर्मी में मुनहमिक रहे और मुतालआ जारी रक्खा तो इनका फ़न रफ़्ता-रफ़्ता और निखर आयेगा और आइन्दा शे'री मजमूआ इस मजमूए से कहीं बेहतर होगा।

'अल्लाह करे जोरे-क़लम और जियादा'

—डॉ. मुहम्मद हुसैन

4 जून, 2008

अपनी बात

हादिसे मेरी ज़िन्दगी का एक हिस्सा हैं! इन्हीं हादिसो ने मुझे जीने का हौसला बख़्शा और शे'र कहने पर मजबूर किया। हादिसे भी मुझे उतने ही अज़ीज़ हैं जितनी की शाइरी अज़ीज है! शाइरी मेरे जज्बातो-एहसासात को बयान करने का ज़रीआ है।

फ़ने-शाइरी से मुझे वाक़िफ़ करवाने में मेरे उस्तादे मुहतरम मुहम्मद हनीफ़ साहब 'शमीम' बीकानेरी (जा-नशीने मस्तान) का बहुत बड़ा हाथ है। शमीम साहब ने क़दम-क़दम पर मेरी रहनुमाई फ़रमाई मैं दिल की गहराइयों से उन का शुक्रगुजार हूं।

मेरे वालिद मुहतरम आबिद हसन साहब ने भी हर लम्हा मेरी हौसला-अफ्ज़ाई फ़रमाई! जिनकी कोशिशों और तआवुन से महल्ला भिश्तियान में मुशाइरों का इन्अिक़ाद होता रहा है।

मैं मुहतरम अहमद अली ख़ां साहब 'मन्सूर' चूरूवी, मुहतरम शीन काफ निज़ाम साहब, मुहतरम मिस्त्री अमीनुद्दीन साहब, जिनकी अदबी ख़िदमात हमारे लिये बाइसे-फ़ख्र हैं और मुहतरम डॉ. मुहम्मद हुसैन साहब का ममनूनो-मशकूर हूं जिन्होंने अपने ताअस्सुरात से मेरी शे'री ज़हानत को चार चाद लगाये। साथ ही जनाब अल्लाह बख़्श साहब 'साहिल' उर्फ़ कालूजी, जनाब बाबू जमील अहमद साहब, जनाब सईद भाई साहब, जनाब सरदार हुसैन साहब व तमाम दोस्तो और अहल-महल्ला का शुक्रगुजार हूं जिन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया। मेरा ये मजमूआ 'एहसास के रंग' इन्हीं हज़रात की मुहब्बतो और दुआओं से मंजरे-आम पे आ सका। मैं उम्मीद करता हूं कि आपका और बीकानेर की अवाम का प्यार मुझे इसी तरह मिलता रहेगा।

—बुनियाद हुसैन 'ज़हीन'

तरतीब

हम्द

हुई है आज मुयस्सर तेरे हवाले से
वो ज़िन्दगी जो है ख़ुशतर तेरे हवाले से

ये सच है ख़ालिक़े-अकबर तेरे हवाले से
'संवर गये हैं मुक़द्दर तेरे हवाले से'

मुरादें जो भी हैं मेरी तेरे करम के तुफ़ैल
क़ुबूल होंगी सरासर तेरे हवाले से

जहां को आज भी तारीकियां हैं घेरे हुए
तनेगी नूर की चादर तेरे हवाले से

तेरे हवाले से गुलशन में फूल महके हैं
सदफ़ में पैदा हैं गौहर तेरे हवाले से

तेरे हबीब की अज़्मत का ये सबूत भी है
जो कलमा पढ़ते हैं कंकर तेरे हवाले से

है तेरी ज़ात से उम्मीद और चमकेगा
'ज़हीन' का भी मुक़द्दर तेरे हवाले से

हम्द=ख़ुदा की तारीफ़. मुयस्सर=प्राप्त. सदफ़=सीप. तुफ़ैल=द्वारा, कारण. तारीकियां=अन्धेरे. गौहर=मोती. हबीब=मित्र, प्रेमी. अज़्मत=महानता. कलमा=वाक्य, वचन.

दुआ

फूल, ख़ुशबू, बहार दे मौला
अब फ़ज़ा ख़ुशगवार दे मौला

अब ज़मीं को संवार दे मौला
ज़र्रा-ज़र्रा निखार दे मौला

जो हैं बे-रोज़गार उनको भी
रिज़्क़ दे, कारोबार दे मौला

ग़मज़दा हैं जो लोग उन पर भी
थोड़ी ख़ुशियां उतार दे मौला

तेरी हर इक अता पे राज़ी हूं
फूल दे या कि ख़ार दे मौला

फ़ज़ा=वातावरण ख़ुशगवार=रुचिकर, सुस्वाद रिज़्क़=अन्न, जीविका.

राहे-हक़ से भटक न जाऊं कहीं
नफ़्स पे इख़्तियार दे मौला

सर उठा कर जियें ज़माने में
ज़िन्दगी बा-वक़ार दे मौला

ज़ुल्म के जिससे हों ख़ता औसान
ऐसा सब्रो-क़रार दे मौला

जोश पर है जो ज़ुल्म का दरिया
उसका पानी उतार दे मौला

इल्तिजा है 'ज़हीन' की तुझ से
शाइरी पे निखार दे मौला

राहे-हक़=भलाई का रास्ता नफ्स=अस्तित्व, सार, सच्चाई. इख़्तियार=अधिकार. औसान=होश, बुद्धि. सब्रो-क़रार=बर्दाश्त और सुकून.

ना'त

शादो-ख़ुर्रम इसलिये हर मुफ़लिसो-ज़रदार है
मरहबा स्वल्ले-अला ये आमदे-सरकार है

हम ग़ुलामाने मुहम्मद हैं ख़ुदा के फ़ज़्ल से
कल भी था और आज भी इस बात का इक़रार है

फैलती ही जा रही है तीरगी अब हर तरफ़
फिर जहां को नूरे-हक़ की रोशनी दरकार है

वज्द में है आस्मां ख़ुशियां मनाती है ज़मीं
है विलादत उसकी जो कोनैन का मुख़तार है

शादो-खुर्रम=प्रसन्नचित्त. मुफलिसो-जरदार=गरीब और मालदार फ़ज़्ल=मेहर
इक़रार=मानना. तीरगी=अन्धेरा. नूरे-हक़=ईश्वर का प्रकाश. दरकार=ज
वज्द=झूमना. विलादत=पैदाइश. कोनैन=दोनों जहान. मुख़तार=अधिकार वाला.

ये शबे-मेअराज दुनिया भर पे ज़ाहिर हो गया
तेज़तर बुर्राक़ से भी आपकी रफ़्तार है

ख़ूबियां ही ख़ूबियां हैं आपके किरदार में
आपका किरदार तो बस आपका किरदार है

उनकी ख़ुशबू से मुअत्तर है मेरे दिल का जहां
इसलिये हर लफ़्ज़े-ना'ते-पाक ख़ुशबूदार है

मिल ही जायेगी उसे कौनेन की दौलत 'ज़हीन'
जिसके दिल में हज़रते-ख़ैरुल-बशर का प्यार है

ज़ाहिर=प्रकट बुर्राक़=वो सवारी जिस पर मुहम्मद (स्वल.), मेअराज पर गये थे.
मुअत्तर= सुगंधित.

क़तआ

नबी के ज़िक्र से मोमिन का मन महकता है
बहार आने से जैसे चमन महकता है
मेरा अक़ीदा है मुंह पर अगर दमे-तक्फ़ीन
मली हो ख़ाके-मदीना तो तन महकता है

मोमिन=ईमान वाला. अक़ीदा=आस्था, श्रद्धा. दमे-तक्फ़ीन=कफ़न पहनाते समय. ख़ाके-मदीना=मदीने की मिट्टी.

ग़ज़लें

उमीद मन्ज़िले-मक़सूद की बहुत कम है
तेरे मिज़ाज में आवारगी बहुत कम है

नये ज़माने के इन्सान क्या हुआ तुझको
तेरे सुलूक में क्यूं सादगी बहुत कम है

वो जिनसे ज़ीस्त की हर एक राह रोशन थी
उन्हीं चराग़ों में अब रोशनी बहुत कम है

मैं अपनी उम्र की तुझको दुआएं दूं कैसे
मुझे ख़बर है मेरी ज़िन्दगी बहुत कम है

जो सायादार कभी मौसमे-बहार में था
उसी दरख़्त का साया अभी बहुत कम है

तमाम रिश्तों की बुनियाद है फ़क़त एहसास
मगर दिलों में तो एहसास ही बहुत कम है

बदलते दौर की ज़द में है गुलसितां का निज़ाम
'ज़हीन' फूलों में अब ताजगी बहुत कम है

मन्ज़िले-मक़सूद=वो स्थान जहां पहुंचना है. मिज़ाज=स्वभाव. ज़ीस्त=जीवन. निज़ाम=प्रबन्ध, व्यवस्था. फ़क़त=सिर्फ़.

वो कुछ ऐसी अदा से मिलता है
दर्द जैसे दवा से मिलता है

बेमुरव्वत सही प क्या कीजे
दिल उसी बेवफ़ा से मिलता है

फैल जाती है आग जंगल में
जब भी शो'ला हवा से मिलता है

है वो आलूदगी फ़ज़ाओं में
ज़हर हम को हवा से मिलता है

उसकी अठखेलियों का क्या कहना
ख़्वाब में भी अदा से मिलता है

हर कली को मिज़ाज शर्मीला
तेरी शर्मो-हया से मिलता है

जिन्दगी में सुकून मुझ को 'ज़हीन'
जाने किस की दुआ से मिलता है

आलूदगी=प्रदूषण. मिजाज=आदत, स्वभाव.

कितने मा'सूम परिन्दों का ठिकाना होगा
क्या शजर काटने वालों ने ये सोचा होगा

आलमे-यास में जब याद वो आया होगा
अश्क चन-चन के लहू आंख से टपका होगा

ज़िन्दगी तुझ से डरा है न डरेगा वो कभी
मौत की गोद में दिन-रात जो खेला होगा

मुश्किलें ज़ीस्त की आसान लगेंगी उस को
जिसको हर हाल में जीने का सलीक़ा होगा

उसने अश्कों के दिये कैसे जला रक्खे हैं
रात के घोर अंधेरे में वो तन्हा होगा

बारहा जिसको पुकारा है धड़कते दिल ने
वो मेरी याद में इक बार तो तड़पा होगा

आलमे-यास=उदासी की हालत, ज़ीस्त=जीवन, बारहा=बार-बार

किस क़दर डरता है मज़्लूम की आहों से फ़लक
ज़िन्दगी तूने तो हर दौर में देखा होगा

न कोई दोस्त, न अहबाब, न रिश्ते-नाते
सिर्फ़ दस्तूर है जो हम को निभाना होगा

फैल जाएं न ज़माने पे अंधेरे यारो
अब चराग़ों को हवाओं से बचाना होगा

याद आयेगा तुम्हें गांव के पेड़ों का हुजूम
जिस्म जब शहर की गर्मी से झुलसता होगा

जब भी अंगड़ाई मेरी याद ने ली होगी 'ज़हीन'
'उसने आईना बड़े ग़ौर से देखा होगा'

फ़लक=आस्मान. अहबाब=मित्र. दस्तूर=रिवाज. हुजूम=भीड़.

धूप में जब भी बाग़ जलता है
साथ दिल के दिमाग़ जलता है

एक ज़ालिम के ज़ुल्म से अब तक
है वतन पर जो दाग़ जलता है

क़ाफ़िले मन्ज़िलों को पा न सके
मुद्दतों से सुराग़ जलता है

मेरे दामन पे तेरी उल्फ़त का
जो लगा है वो दाग़ जलता है

दिल में नाकाम हसरतों का 'ज़हीन'
धीमे-धीमे चराग़ जलता है

सुराग़=खोज, पता

ग़मे-हयात से मेरा जिगर महकता है
ख़ुशी की बात ये है टूटकर महकता है

वो मेरे साथ है महसूस जब भी करता हूं
इसी ख़याल से मेरा सफ़र महकता है

वो चन्द दिन जो तेरी अन्जुमन में गुज़रे थे
अब उनकी याद से दिल का नगर महकता है

बहार आई तो पंछी भी चहचहाने लगे
ख़ुशी से दश्त का हर इक शजर महकता है

निज़ाम तेरा है तज़ईने-कायनात तेरी
हर एक ज़र्रें में तेरा हुनर महकता है

बिखर ही जाता है ख़ुशबू सा ठेस लगने से
ये दिल का आइना है टूटकर महकता है

किया है जब भी उसे याद मैंने दिल से 'ज़हीन'
मेरे मकान का हर एक दर महकता है

ग़मे-हयात=जीवन का दुख. अन्जुमन=महफ़िल दश्त=जंगल. शजर=पेड़. निज़ाम=प्रबन्ध, व्यवस्था तज़ईने-कायनात=दुनिया की सज-धज. ज़र्रें=कण.

आदमी कब किसी से डरता है
ये तो बस ज़िन्दगी से डरता है

क़हर ढाएगी जाने क्या मुझ पर
दिल तेरी ख़ामुशी से डरता है

मुर्दादिल को ये कौन समझाए
ज़ुल्म, जिन्दादिली से डरता है

डर ख़ुदा का न हो अगर दिल में
आदमी आदमी से डरता है

ज़ख्म जिसने कभी दिये थे 'ज़हीन'
आज तक दिल उसी से डरता है

फितरत है तेरी, ज़ुल्म की तू इन्तिहा करे
हमने किया है सब्र ख़ुदा और अता करे

'गिर जाये जिस पे कोहे-मुसीबत वो क्या करे'
हालाते-ज़िन्दगी के मुक़ाबिल रहा करे

हर एक पल वो करता है मेरे लिए दुआ
इसके सिवा वो और करे भी तो क्या करे

हथियार सब्र का है तेरे पास तू न डर
करने दे क्या है गर वो जफा पे जफ़ा करे

फ़ितरत=आदत. कोहे-मुसीबत=मुसीबत का पहाड़. मुक़ाबिल=सामने

हैवानियत का रक्स है आलम में हर तरफ़
इस हाल में भला कोई कब तक जिया करे

अर्ज़ो-समा भी उससे लरज़ते हैं, इसलिये
मुफ़्लिस की आहो-ज़ारी से इन्सां बचा करे

रक्खे नज़र वो अपने नशेमन पे हर घड़ी
जब भी फ़ज़ा में कोई परिन्दा उड़ा करे

जो चाहता है उसकी दुआएं क़ुबूल हों
शामिल वो हर ग़रीब के ग़म में रहा करे

दामन जो मेरा देख के हंसता है ऐ 'ज़हीन'
पहले वो अपना चाक गरेबां सिया करे

हैवानियत=जानवरों जैसा आचरण. रक्स=नाच. अर्ज़ो-समा=ज़मीन और आस्मान. आहो-ज़ारी=रोना-धोना. नशेमन=आशियाना.

दामने-सब्र भर न जाए कहीं
ज़ुल्म हद से गुजर न जाए कहीं

तू ज़माने से डर न जाए कहीं
वा'दा करके मुकर न जाए कहीं

सोचता हूं कि तेरी यादों का
ज़ख़्म गहरा है भर न जाए कहीं

ज़ुल्म से बाज़ आ अरे ज़ालिम
सर से पानी गुज़र न जाए कहीं

दामने-सब्र=बर्दाश्त का आंचल.

हर क़दम पर है मौत की आहट
ज़िन्दगानी बिखर न जाए कहीं

शोर है उनकी आमद-आमद का
अब तबीअत सुधर न जाए कहीं

याद आई है टूटकर तेरी
चोट दिल की उभर न जाए कहीं

अब तो एहसास ही बचा है 'ज़हीन'
और ये एहसास मर न जाए कहीं

आमद=आना.

ग़मों से प्यार न करता तो और क्या करता
ये दिलफ़िगार न करता तो और क्या करता

वो ज़ुल्म करता था मज़्लूम पे तो मैं उस पर
पलट के वार न करता तो और क्या करता

वो अह्द करके गया था कि लौट आऊंगा
मैं इन्तिज़ार न करता तो और क्या करता

था जिस फ़साने का हर लफ़्ज़ दास्ताने-अलम
वो अश्कबार न करता तो और क्या करता

फ़िगार=टूटा हुआ. अह्द=वा'दा

समझ लिया मुझे मन्सूर एक दुनिया ने
क़ुबूल दार न करता तो और क्या करता

जो ज़ख़्म तूने दिये उन को ग़म के धागे में
पिरो के हार न करता तो और क्या करता

मेरे यक़ीं पे जो उतरा नहीं खरा तो उसे
मैं शर्मसार न करता तो और क्या करता

'ज़हीन' उसके सिवा कौन था मेरा हमदर्द
मैं उससे प्यार न करता तो और क्या करता

मन्सूर=एक सन्त जिन्हें फांसी दे दी गई. दार=फासी, सूली

हम समझते हैं कर्बला क्या है
शहर में कोई हादिसा क्या है

रोज़ जीते हैं रोज मरते हैं
जिन्दगी ये है तो सज़ा क्या है

उसने तोड़ा है बारहा दिल को
उसकी फ़ितरत है ये, गिला क्या है

नक़्दे-जां कर चुका हूं तुझ पे निसार
मेरे हिस्से में अब बचा क्या है

माजरा=हाल, घटना. नक़्दे-जां=जान की दौलत. कर्बला=इराक़ का एक शहर.

रंज काफ़ूर हो गये सारे
तेरी आंखों की ये अदा क्या है

ज़िन्दगी में निखार है ग़म से
ग़म नहीं है तो फिर मजा क्या है

ख़ुद का मतलब है ख़ुद की है ख़्वाहिश
और इन्सां में अब बचा क्या है

सहमे-सहमे से हैं परिन्दे क्यूं
अहले-गुलशन इन्हें हुआ क्या है

इश्क़ तो इश्क़ है 'ज़हीन' इसकी
इब्तिदा क्या है, इन्तिहा क्या है

रंज=ग़म, काफ़ूर=उड़ जाना, ग़ायब हो जाना

वो सूरमा जो हवाओं के पर कतरता है
मेरे वजूद से क्यूं बार-बार डरता है

हमारा हक़ है गुलिस्तां पे गुलसितां वालो
हमारा ख़ून ही फूलों में रंग भरता है

मैं उसकी बात पे कैसे यक़ीन कर लेता
इधर जो करता है वा'दा उधर मुकरता है

उसी पे आता है इल्ज़ाम बेवफ़ाई का
वफ़ा के नाम पे जो बार-बार मरता है

जिसे भुलाए 'ज़हीन' आज एक अरसा हुआ
वो चेहरा मुझ से अभी तक सवाल करता है

सूरमा=बहादुर. वजूद=अस्तित्व.

तुम अपने दिल से ज़माने का ग़म भुला देना
अजल भी सामने आए तो मुस्कुरा देना

मेरी वफ़ाओं पे आए न ऐ'तवार तो फिर
मेरी वफ़ा के हर इक नक़्श को मिटा देना

तुम्हारी याद का हर लम्हा वस गया दिल में
'हमारे बस में नहीं है तुम्हें भुला देना'

इलाही हम भी रहें कामयाव मक़्सद में
हमें भी अज़्मे-शहीदाने-कर्बला देना

जो वात अम्न की करते हैं इस जहां में 'ज़हीन'
उन्हीं का काम है शो'अलों को भी हवा देना

अजल=मौत. नक़्श=निशान क़ाइल=मानना मक़्सद=उद्देश्य.

तुमने फूंके हैं आशियां कितने
हमको मा'लूम है कहां कितने

बाग़वानों से पूछते रहिए
और जलने हैं गुलसितां कितने

तेरे दिल पर हसीन यादों के
छोड़ जाऊंगा, मैं निशां कितने

ऐ परिन्दे उड़ान भर कर देख
तेरे आगे हैं आस्मां कितने

ऐसे पल जिनमें तेरा साथ न था
मुझ पे गुजरे हैं वो गिरां कितने

गिरां=भारी

एक ता'बीर के न होने से
हो गये ख़्वाब रायगां कितने

ये ज़माने पे खुल न जाए कहीं
राज़ हैं अपने दर्मियां कितने

ढूंढने से कहीं ख़ुशी न मिली
ग़म मिले हैं यहां-वहां कितने

ज़िन्दगी में क़दम-क़दम पे 'ज़हीन'
देने पड़ते हैं इम्तिहां कितने

रायगां=बेकार. राज़=भेद. दर्मियां=बीच में

जब तक तेरे जमाल की जल्वागरी रही
मेरे दिलो-दिमाग में इक ताज़गी रही

वो लोग ख़ुशनसीब थे जिनको सुकूं मिला
मेरी हयात में तो फ़क़त बेकली रही

तेरी ख़ुशी के वास्ते क्या कुछ नहीं किया
इक जिन्दगी थी वो भी तेरे नाम ही रही

अब हो चली है रात चलो अपने घर चलें
मिलते रहेंगे यार अगर ज़िन्दगी रही

फ़क़त=सिर्फ़ बेकली=बेचैनी

तन्हा थी मेरी रात सहारा न था कोई
थी तेरी याद साथ जो ग़म बांटती रही

मुफ़लिस की ज़िन्दगी है कि जां का वबाल है
दो रोटियों के वास्ते जो दौड़ती रही

मिलने को यूं तो मुझ को बहुत कुछ मिला मगर
कल जो तेरी कमी थी वही आज भी रही

दीवानगी ने मसअले हल कर दिये 'ज़हीन'
दीदावरों की दीदावरी तो धरी रही

मुफलिस=गरीब. वबाल=मुसीबत. मसअले=समस्याएं. दीदावरों=देखने वालों

जब नहीं है शराब ख़ाने में
फिर सुकूं है कहां ज़माने में

दिल हो सीने में या कि हो पत्थर
दर्द होता है टूट जाने में

देखकर इन उदास चेहरों को
शर्म आती है मुस्कुराने में

अपनी यादों की इक महक यारो
छोड़ जायेंगे हम ज़माने में

दुश्मनों से गिला करूं कैसे
दोस्त ही जब लगे मिटाने में

लुत्फ़ आता है क्या अमीरों को
मुफलिसी का मज़ाक़ उड़ाने में

रेंगती ज़िन्दगी है और हम हैं
चैन आता नहीं ज़माने में

अब नज़र सब की हो गई महदूद
खो गए सब नये-पुराने में

देखिये भर गया मेरा दामन
सिर्फ़ दस्ते-दुआ उठाने में

वो भी बर्क़े-तपां ने फूंक दिये
चार तिनके थे आशियाने में

आतिशे-इश्क़ को न छेड़ 'ज़हीन'
हाथ जल जाएंगे बुझाने में

महदूद=सीमित. दस्ते-दुआ=दुआ के हाथ. लुत्फ़=कृपा, मज़ा. बर्क़े-तपां=बिजली.
आतिशे-इश्क़=प्रेम अग्नि.

बगावत है लाज़िम ज़माने से पहले
मुहब्बत की दुनिया बसाने से पहले

ग़रीबों की आहें जला देंगी तुम को
ज़रा सोच लो ज़ुल्म ढाने से पहले

वो रुख़सत हुए दिल को देकर उदासी
ख़ुशी थी बहुत उनके आने से पहले

मैं जलते हुए घर नहीं देख सकता
जला दो मुझे घर जलाने से पहले

अब आई समझ में सियासत की चालें
नहीं था मैं वाक़िफ़ ज़माने से पहले

तुम अब मेरे अश्कों से क्यूं हो परेशां
ज़रा सोच लेते रुलाने से पहले

'ज़हीन' अपने बिरते को भी देख लेते
किसी और को आज़माने से पहले

सियासत=राजनीति. वाकिफ़=जानना. बिरते=ख़ुद के दिल में झांक कर देखना, हौसले.

ज़ह्नो-दिल आज तक मुअत्तर हैं
कितनी दिलकश थी रात फूलों की

रूह को ताज़गी-सी मिलती है
जब भी होती है बात फूलों की

रंग, ख़ुशबू, बहार और निकहत
है अजब कायनात फूलों की

अब तो पूरे शबाब पर है बहार
देखनी है बरात फूलों की

गुलसितां को उजाड़ने वाला
अब भी करता है बात फूलों की

खिलना और खिल के ख़ाक में मिलना
बस! यही है हयात फूलों की

ज़ह्नो-दिल=दिमाग और दिल. मुअत्तर=सुगन्धित. रूह=आत्मा. कायनात=सृष्टि.
शबाब=यौवन हयात=जीवन.

चेहरे से गर्द रंजो-अलम की हटा के देख
मेरा ये मशवरा है कभी मुस्करा के देख

महफूज़ अब नहीं हैं चरागों के क़ाफ़िले
तेवर बदलते वक़्त की पागल हवा के देख

क़ुर्बां है तेरे नाम पे मेरी हर इक ख़ुशी
मेरी वफ़ा को दिल की तहों में बसा के देख

फिर बस्तियों को आग लगा देना शौक़ से
अपने लिये तू पहले कोई घर बना के देख

क्यूं रो रहा है शहर के हालात देखकर
मंजर तसव्वुरात में कर्बो-बला के देख

पल-पल है तेरी याद में बीता हर एक पल
मेरे दिलो-दिमाग़ के अन्दर समा के देख

ऐ दोस्त मशविरा है तुझे ये 'ज़हीन' का
रस्मो-रहे-वफ़ा भी कभी आजमा के देख

गर्द=धूल. रंजो-अलम=दुख और मुसीबत. तसव्वुरात=कल्पनाएं, ध्यान, खयालात.
रस्मो-रहे-वफ़ा=वफ़ा की रस्म और राह. कर्बो-बला=इराक़ का एक शहर.

अब तो आदत ही बन गई अपनी
दर्द सहते हैं, प्यार करते हैं

हौसला हो तो सामने आयें
पीठ पीछे जो वार करते हैं

तेरे वादे पे ऐ'तबार नहीं
फिर भी हम इन्तिज़ार करते हैं

रोक ले अपने आंसुओं को 'ज़हीन'
ये हमें बेक़रार करते हैं

सरख़ुशी की ज़ीस्त में सौगात लेकर आएगा
जब कोई बच्चा नये जज़्बात लेकर आएगा

वक़्त जब मजबूरिये-हालात लेकर आएगा
ख़ून में डूबे हुए दिन-रात लेकर आएगा

ग़म तेरी बर्बादियों का देख लेना एक दिन
जान पर मेरी कई सदमात लेकर आएगा

मेरे ज़ख़्मों को वो फिर से ताज़ा करने के लिये
बातों-बातों में पुरानी बात लेकर आएगा

अब वो मेरे सह्‌ने-दिल में जब भी रक्खेगा क़दम
मेरे हिस्से की ख़ुशी भी साथ लेकर आएगा

हम ग़रीबों की दुआओं का नया बादल 'ज़हीन'
रहमतों की इक नई बरसात लेकर आएगा

सरख़ुशी=ख़ुशहाली. ज़ीस्त=जीवन. सहने-दिल=दिल का आंगन

अब तो आदत ही बन गई अपनी
दर्द सहते हैं, प्यार करते हैं

हौसला हो तो सामने आयें
पीठ पीछे जो वार करते हैं

तेरे वादे पे ऐ'तबार नहीं
फिर भी हम इन्तिज़ार करते हैं

रोक ले अपने आंसुओं को 'ज़हीन'
ये हमें बेक़रार करते हैं

सरख़ुशी की ज़ीस्त में सौग़ात लेकर आएगा
जब कोई बच्चा नये जज़्बात लेकर आएगा

वक़्त जब मजबूरियें-हालात लेकर आएगा
ख़ून में डूबे हुए दिन-रात लेकर आएगा

ग़म तेरी बर्बादियों का देख लेना एक दिन
जान पर मेरी कई सदमात लेकर आएगा

मेरे ज़ख़्मों को वो फिर से ताज़ा करने के लिये
बातों-बातों में पुरानी बात लेकर आएगा

अब वो मेरे सहने-दिल में जब भी रक्खेगा क़दम
मेरे हिस्से की ख़ुशी भी साथ लेकर आएगा

हम ग़रीबों की दुआओं का नया बादल 'ज़हीन'
रहमतों की इक नई बरसात लेकर आएगा

सरख़ुशी=ख़ुशहाली. ज़ीस्त=जीवन. सहने-दिल=दिल का आंगन

लबे-जहां पे क़सीदे हमारी शान के हैं
तुझे ख़बर है कि हम कैसी आन-बान के हैं

ज़मीन पर हैं क़दम ख़्वाब आस्मान के हैं
शिकस्ता पर हैं मगर हौसले उड़ान के हैं

फिसल न जाएं कहीं पांव फिर बुलन्दी से
ज़रा संभल के चलो रास्ते ढलान के हैं

वफ़ा, ख़ुलूस, मुहब्बत, सदाक़तो-ईमां
ये सारे लफ़्ज़ हमारी ही दास्तान के हैं

ये दौरे-शामो-सहर अस्ले-ज़िन्दगी कब है
ज़मीन वालो! ये चक्कर तो आस्मान के हैं

लबे-जहां=दुनिया के होंटो पर. क़सीदे=प्रशंसा में कहे गये छन्द. सदाक़तो-ईमां=सच्चाई और ईमान. दास्तान=कहानी. अस्ले-ज़िन्दगी=जीवन की वास्तविकता.

तेरी भवों की तनावट को जानता हूं मैं
ये तीर जितने हैं सारे तेरी कमान के हैं

ज़माने भर को बताने की क्या ज़रूरत है
'ये मसअले तो तेरे मेरे दर्मियान के हैं'

तकान रोक न पाएगी रास्ता मेरा
समझ रहा हूं इरादों को जो तकान के हैं

ज़बान वो जिसे कहते हैं आज सब उर्दू
'ज़हीन' हम भी तो शैदा उसी ज़बान के हैं

दर्मियान=बीच में. तकान=थकान. शैदा=आशिक़

क्या चाहती है उन की नज़र देखते रहे
मजबूर थे ब-दीदा-ए-तर देखते रहे

आज उनकी चश्मे-नाज़ को तर देखते रहे
देखा न जा रहा था मगर देखते रहे

कैसा हुआ है शह्र में इस बार हादिसा
सहमे हुए फ़साद में घर देखते रहे

जब क़ाफ़िला रवाना हुआ नींद आ गई
जागे तो सिर्फ़ गर्दे-सफ़र देखते रहे

पिछली रुतों की याद में तड़पा किये 'ज़हीन'
उजड़ा हुआ-सा दिल का शजर देखते रहे

ब-दीद-ए-तर=भीगी आंखों. शजर=पेड़

कौन कहता है सिर्फ़ ध्यान में है
वो मेरे दिल में मेरी जान में है

जिसके पर नोच डाले थे तुम ने
वो परिन्दा अभी उड़ान में है

कल कोई फ़ासला न था हम में
बेरुख़ी आज दर्मियान में है

ज़िन्दगी की तबाही के सामां
दौरे-हाज़िर की हर दुकान में है

वो सुनेगा मेरी दुआओं को
इतनी तासीर तो ज़बान में है

है गवाहों पे फ़ैसले का मदार
झूट ही झूट बस बयान में है

कितने दुश्वार मरहले हैं 'ज़हीन'
ज़िन्दगी सख़्त इम्तिहान में है

फ़ासला=दूरी. बेरुख़ी=मुंह मोड़ना, रूठना. दौरे-हाज़िर=वर्तमान काल, अभी. मदार=निर्भर होना तासीर=गुण, प्रभाव मरहले=मन्ज़िल.

वो शख़्स अपना मुक़द्दर संवार लेता है
जो बीज प्यार के बोता है प्यार लेता है

वो लेन-देन का बिलकुल खरा नहीं यारो
जो नफरतों के इवज़ मुझ से प्यार लेता है

ग़मे-हयात के जब मुझ पे वार होते हैं
मुझे पनाह में दामाने-यार लेता है

अजीब शख़्स है छुप-छुप के चोर नज़रों से
'नज़र में चेहरा-ए-दिलबर उतार लेता है'

पलट ही देता है इक पल में जंग के पासे
विग़ा का फ़ैसला जब शह-सवार लेता है

जो सब्र करता है शुक्रे-ख़ुदा के साथ 'ज़हीन'
तमाम उम्र वो हंसकर गुज़ार लेता है

इंतिक़ाम=बदला. परवरदिगार=ख़ुदा. इवज़=बदले में. दामाने-यार=मित्र का आंचल.

हो गया कितना मो'तबर देखो
दस्ते-क़ातिल का भी हुनर देखो

ज़िन्दगी फिर है दांव पर देखो
और ज़माना है बे-ख़बर देखो

अब परिन्दे भी हैं कहां महफ़ूज़
उनके बिखरे हुए ये पर देखो

कितनी लम्बी है ज़िन्दगी, लेकिन
फिर भी लगती है मुख़्तसर देखो

मौत को जो डरा रहा है उसे
जिन्दगी से लगे है डर देखो

मो'तबर=भरोसे के क़ाबिल. दस्ते-क़ातिल=क़ातिल का हाथ. मुख़्तसर=संक्षिप्त.

सुनामी के नाम

साहिल पे जो हुजूम था जाने किधर गया
लहरों के साथ मौत का मंज़र उतर गया

शीराज़-ए-हयात जो यकसर बिखर गया
मंज़र ही था कुछ ऐसा कि हर शख़्स डर गया

कैसे हुआ ये हादिसा कुछ भी ख़बर नहीं
गोया दिलो-दिमाग़ में सागर उतर गया

वा'दा किया था तुझ से इबादत का ऐ ख़ुदा
बन्दा न जाने वादे से कैसे मुकर गया

जिस राहबर पे हम को बहुत ऐ'तिमाद था
करके तबाह हम को वही राहबर गया

किस दर्जा दिलशिकन था वो लम्हा न पूछिये
यादों को साथ ले के जो दिल में उतर गया

वो दिल जो दूर था ग़मो-आलाम से कभी
अब तो 'ज़हीन' वो भी शरारों से भर गया

शीराज-ए-हयात=जीवन का सिलसिला. यकसर=अचानक. राहबर=रास्ता बताने वाला. ऐ'तिमाद=विश्वास दिलशिकन=दिल तोड़ने वाला. शरारों=अंगारों. ग़मो-आलाम=दु:ख और मुसीबत.

छोड़ कर उड़ गए सभी पंछी
कितना मायूस है शजर देखो

ऐ'ब औरों के ढूंढने वालो!
ख़ुद गरीबां में झांक कर देखो

कितने दरिया हैं दर्द के, दिल में
मेरी आंखों में डूब कर देखो

सरबुलन्दी है अस्ल में वो 'ज़हीन'
नोके-नेज़ा पे है जो सर देखो

ऐब=बुराई. नोके-नेज़ा=भाले की नोक.

सुनामी के नाम

साहिल पे जो हुजूम था जाने किधर गया
लहरों के साथ मौत का मंज़र उतर गया

शीराज़-ए-हयात जो यकसर बिखर गया
मंज़र ही था कुछ ऐसा कि हर शख़्स डर गया

कैसे हुआ ये हादिसा कुछ भी ख़बर नहीं
गोया दिलो-दिमाग़ में सागर उतर गया

वा'दा किया था तुझ से इबादत का ऐ ख़ुदा
बन्दा न जाने वादे से कैसे मुकर गया

जिस राहबर पे हम को बहुत ऐ'तिमाद था
करके तबाह हम को वही राहबर गया

किस दर्जा दिलशिकन था वो लम्हा न पूछिये
यादों को साथ ले के जो दिल में उतर गया

वो दिल जो दूर था ग़मो-आलाम से कभी
अब तो 'ज़हीन' वो भी शरारों से भर गया

शीराज-ए-हयात=जीवन का सिलसिला. यकसर=अचानक. राहबर=रास्ता बताने वाला. ऐ'तिमाद=विश्वास दिलशिकन=दिल तोड़ने वाला. शरारों=अंगारों. ग़मो-आलाम=दु.ख और मुसीबत.

छोड़ कर उड़ गए सभी पंछी
कितना मायूस है शजर देखो

ऐ'ब औरों के ढूंढने वालो!
ख़ुद गरीबां में झांक कर देखो

कितने दरिया हैं दर्द के, दिल में
मेरी आंखों में डूब कर देखो

सरबुलन्दी है अस्ल में वो 'ज़हीन'
नोके-नेज़ा पे है जो सर देखो

ऐब=बुराई. नोके-नेज़ा=भाले की नोक.

सुनामी के नाम

साहिल पे जो हुजूम था जाने किधर गया
लहरों के साथ मौत का मंज़र उतर गया

शीराज़-ए-हयात जो यकसर बिखर गया
मंज़र ही था कुछ ऐसा कि हर शख़्स डर गया

कैसे हुआ ये हादिसा कुछ भी ख़बर नहीं
गोया दिलो-दिमाग़ में सागर उतर गया

वा'दा किया था तुझ से इबादत का ऐ ख़ुदा
बन्दा न जाने वादे से कैसे मुकर गया

जिस राहबर पे हम को बहुत ऐ'तिमाद था
करके तबाह हम को वही राहबर गया

किस दर्जा दिलशिकन था वो लम्हा न पूछिये
यादों को साथ ले के जो दिल में उतर गया

वो दिल जो दूर था ग़मो-आलाम से कभी
अब तो 'ज़हीन' वो भी शरारों से भर गया

शीराज-ए-हयात=जीवन का सिलसिला. यकसर=अचानक. राहबर=रास्ता बताने वाला. ऐ'तिमाद=विश्वास. दिलशिकन=दिल तोड़ने वाला. शरारों=अंगारों. ग़मो-आलाम=दु:ख और मुसीबत.

ज़िन्दगी का सफर हसीन रहा
ये तमाशा तो बेहतरीन रहा

कट रहा था जो गांव का बरगद
गांव कैसे तमाशबीन रहा

थोड़ा खिंचते ही देख टूट गया
दिल का रिश्ता बड़ा महीन रहा

तू ही था और न तेरा साया था
कैसे कह दूं सफ़र हसीन रहा

कैसे आता नज़र मुझे ख़ंजर
जब रहा ज़ेरे-आस्तीन रहा

मैं बरी था हर एक ग़म से 'ज़हीन'
जब तलक दिल में वो मकीन रहा

महीन=बारीक. ज़ेरे-आस्तीन=आस्तीन के नीचे. मकीन=मकान मे रहने वाला.

उदास-उदास फ़ज़ा में भी मुस्कुरा के जिये
हम अपने दर्द को दिल में छुपा-छुपा के जिये

तुम्हारी आंख से टपके थे जो हमारे लिये
उन आंसुओं के लिये अश्के-ख़ूं बहा के जिये

निगाहें फेर लीं तुमने तो अपनी पलकों पर
तुम्हारी याद के दीपक जला-जला के जिये

वो फूल जिन से चमन की अना पे आंच आई
हम ऐसे फूलों से दामन बचा-बचा के जिये

कोई दुआ भी हमें ज़िन्दगी की क्यूं देता
हम अपनी मौत को शानों पे ख़ुद उठा के जिये

हर एक मोड़ पे नाकाम हसरतों का 'ज़हीन'
जनाज़ा कांधों पे अपने उठा-उठा के जिये

चमन=बाग. अना=अहंकार. शानों=कंधों. अश्के-ख़ूं=ख़ून के आंसू

फूल खिलने की मौसम ख़बर दे गया
रूह को ताज़गी का सफ़र दे गया

डर गया है वो क्या मेरी परवाज़ से
हौसले छीन कर बालो-पर दे गया

मुश्किलें ज़िन्दगानी की आसां हुई
वक्त जीने का ऐसा हुनर दे गया

उसने अपनी अना पे न आंच आने दी
बात ही बात में अपना सर दे गया

बारिशें रहमतों की बरसने को हैं
उड़ता बादल हमें ये ख़बर दे गया

जब दिखाये उसे उसके चेहरे के दाग़
आइना वो मुझे तोड़ कर दे गया

किसने बख़्शी है फूलों को ख़ुशबू 'ज़हीन'?
कौन है जो शजर को समर दे गया?

परवाज=उड़ान. बालो-पर=बाज़ू और पर. रहमतों=मह्रबानियों शजर=पेड़. समर=फल.

कमज़र्फ़ लोग जीते हैं झूटी लगन के साथ
हमने कभी दग़ा न किया अपने मन के साथ

आख़िर बुझा दिए न वो पागल हवाओं ने
जलते थे जो चराग़ कभी बांकपन के साथ

मेहनत-कशों को बिस्तरे-राहत से क्या ग़रज़
सोते हैं वो सुकून से अपनी थकन के साथ

मा'सूम कुछ परिन्दे गुलिस्तां को देखकर
सहमे हुए से बैठे हैं मायूसपन के साथ

ख़ामोशियों ने और बढ़ा दी हैं उलझनें
मैं घुट के मर न जाऊं तुम्हारी घुटन के साथ

फिरती है मुंह छुपाए चमन में ख़िज़ां 'ज़हीन'
आने को है बहार नये पैरहन के साथ

कमज़र्फ़=कम होसला. बिस्तरे-राहत=आराम का बिस्तर. पैरहन=लिबास

मौत हर वक़्त साथ चलती है
ज़िन्दगी है कि हाथ मलती है

दर्द उठता है दिल में यादों का
जब तेरे ग़म में शाम ढलती है

मुफ़्लिसी की यही अलामत है
जिस्म गलता है, सांस चलती है

अब ये आलम है तेरी फ़ुर्क़त में
दिन उबलता है, रात जलती है

वक़्त जैसे सिमट गया है 'ज़हीन'
सुब्ह होते ही शाम ढलती है

आलम=हालत. अलामत=लक्षण. फ़ुर्कत=जुदाई, वियोग,

लोग ये कहते थे इक लम्बा सफ़र है जिन्दगी
मौत को देखा तो समझे मुख़्तसर है ज़िन्दगी

ख़ून से लिथड़ी हुई लाशें हैं देखो हर तरफ़
ज़ुल्म के इस दौर में फिर दांव पर है ज़िन्दगी

हिम्मतो-जुरअत ही से मिलता है मन्ज़िल का सुराग़
हौसला जीने का हो तो राहबर है ज़िन्दगी

तेरे हर इक गाम पर हैं ठोकरें ही ठोकरें
क्या तुझे एहसास है, तुझ को ख़बर है ज़िन्दगी

भूख, लाचारी, मुसीबत, मुफ़्लिसी है मुल्क में
आज हम आज़ाद हैं और दर-बदर है ज़िन्दगी

क्या सुनाऊं मैं तुम्हें टूटे दिलों की दास्तां
मुख़्तलिफ़ राहों में इक तन्हा सफ़र है जिन्दगी

हाय! किन आंखों से देखें हम ये मंज़र ऐ 'ज़हीन'
टूटती सांसें हैं और बे-बालो-पर है ज़िन्दगी

मुख़्तसर=संक्षिप्त. गाम=क़दम. मुख़्तलिफ़=अलग-अलग. बे-बालो-पर=बिना बाज़ू और पर के.

फूल बनने की तमन्ना में निखर आई है
हर कली मौत का तय करने सफ़र आई है

चीर कर घोर अंधेरे का जिगर आई है
बाद मुद्दत के मुरादों की सहर आई है

मौत के सामने बे-ख़ौफ़ो-ख़तर आई है
ज़िन्दगी जब भी बगावत पे उतर आई है

इस क़दर अश्कों के तारे हैं मेरी पलकों पर
कहकशां जैसे कि पलकों पे उतर आई है

फूल की चाह में कांटों से उलझने के लिए
एक तितली है कि जो सीना-सिपर आई है

सहर=सुब्ह. कहकशां=आकाशगंगा, मंदाकिनी.

कल जो थी राज़े-मुहब्बत की तरह सीने में
अब वही बात अदावत में उभर आई है

शब की संगीन सियाही को मिटाने के लिए
'एक तस्वीर अन्धेरे से उभर आई है'

चांदनी कब है अमीरों के महल तक महदूद
ये तो मुफ़लिस के भी आंगन में उतर आई है

आस्मानों की बुलन्दी भी जिसे छू न सके
तेरे किरदार में वो बात नज़र आई है

उसमें शामिल है चमक कितने सितारों की 'ज़हीन'
नुक़रई सुब्ह उफ़ुक़ पर जो नज़र आई है

गीन-सियाही=घोर अंधेरा. नुक़रई=चांदी जैसी, सफ़ेद उफ़ुक़=क्षितिज

•

जिनके दिलों में अज़्म न था हौसले न थे
वो इम्तिहाने-ज़ीस्त में शामिल हुए न थे

वो छा गए ज़माने की हर शै पे दोस्तो
अल्लाह के सिवा जो किसी से डरे न थे

डसती न क्यूं ये रात की तारीकियां मुझे
पलकों पे तेरी याद के रोशन दिये न थे

तर्के-तअल्लुक़ात मुक़द्दर की बात है
ऐसा भी मत समझ के कभी हम मिले न थे

अज़्म=इरादा. इम्तिहाने-ज़ीस्त=जीवन की परीक्षा. तारीकियां=अंधेर. तर्के-तअल्लुक़ात=सम्बन्ध विच्छेद.

दिल में था जिनके मौत से लड़ने का हौसला
वो लोग ज़िन्दगी से कभी हारते न थे

क्यूं फेर ली है मुझ से नजर आप ने जनाब
ऐसा लगे है जैसे कभी जानते न थे

ख़ुशहाल हूं तो भीड़ है रिश्तों की बेशुमार
इक वक़्त था कि ये मुझे पहचानते न थे

जिनसे महकना था मेरे ज़ख़्मों को ऐ 'ज़हीन'
वो फूल जिन्दगी के चमन में खिले न थे

जिसका सांसों ने गीत गाया है
कैसे कह दूं कि वो पराया है

मैं नहीं हूं वो मेरा साया है
अपने ही ख़ूं में जो नहाया है

याद बे-इख़्तियार आया है
मेरी रग-रग में जो समाया है

ये करिश्मा है सब्र का देखो
कल जो खोया था आज पाया है

कैसा रिश्ता है उससे क्या मा'लूम
जिसने ख़्वाबों में भी रुलाया है

ऐसे सहरा से है गुज़र जिसमें
दूर तक पेड़ है न साया है

बन्द पलकों में उसकी हूं मैं 'ज़हीन'
उसने मुझको कहां छुपाया है

बे-इख़्तियार=अपने-आप. सहरा=रेगिस्तान

ये अपने ख़्वाब सुनहरे कहां छुपाऊंगा
खुलेगी आंख तो मैं ख़ुद ही टूट जाऊंगा

नया-नया सा लगेगा जो ज़िन्दगी का सफ़र
पुरानी राहगुज़ारों को भूल जाऊंगा

नुमायां हो के रहेंगी ये राज की बातें
मैं सोचता हूं कहां तक इन्हें छुपाऊंगा

चटक उठेगी तेरे दिल की हर कली फिर से
मैं गीत जब भी मुहब्बत के गुनगुनाऊंगा

गिला करूंगा न अपनी तबाहियों का कभी
दुआएं दूंगा तुझे और मुस्कुराऊंगा

उजाले रास न आए मेरी तबीअत को
अन्धेरी रात के आंचल में घर बनाऊंगा

सुलग रहे हैं जो अरमान मेरे दिल में 'ज़हीन'
वो मिल गया तो किसी दिन उसे बताऊंगा

राहगुजारों=रास्तों. नुमायां=प्रकट.

कभी दर्दे-दिल की दवा चाहता हूं
कभी रोग इससे सिवा चाहता हूं

अरे बेवफ़ा सुन मैं क्या चाहता हूं
ख़ता मैंने की है सज़ा चाहता हूं

बहुत पहले जो ज़ख़्म तूने दिया था
वही ज़ख़्म फिर से हरा चाहता हूं

अंधेरे न आएं मेरी ज़िन्दगी में
जो जलता रहे वो दिया चाहता हूं

जहां हमसफर से जुदा मैं हुआ था
उसी राह पर लौटना चाहता हूं

सिवा=अतिरिक्त, अधिक. राह=रास्ता.

मुयस्सर न आई थी ता'बीर जिसकी
वही ख़्वाब फिर देखना चाहता हूं

जिसे देखकर ज़ख़्म दिल के हरे हों
उसे इक नज़र देखना चाहता हूं

ज़माने के ज़ुल्मो-सितम सह गया मैं
तेरे ज़ुल्म की इन्तिहा चाहता हूं

'ज़हीन' आज फिर क्यूं मैं उसकी कहानी
उसी की ज़बानी सुना चाहता हूं

मयस्सर=प्राप्त. ता'बीर=ख़्वाब का नतीजा.

हैं भरम दिल का मो'तबर रिश्ते
आज़माओ तो मुख़्तसर रिश्ते

हो गये कितने दर-ब-दर रिश्ते
अपने ही ख़ून में हैं तर रिश्ते

कल महकते थे घर के घर लेकिन
बन गए आज दर्दे-सर रिश्ते

उनसे उम्मीद ही नहीं रक्खी
वरना रह जाते टूटकर रिश्ते

कम ही मिलते हैं इस ज़माने में
दर्द के, ग़म के, हमसफ़र रिश्ते

मैं इन्हें मरहमी समझता था
हैं नमक जैसे ज़ख़्म पर रिश्ते

हैं ये तस्बीह के से दाने 'ज़हीन'
बिखरे-बिखरे से हैं मगर रिश्ते

मो'तबर=भरोसे के क़ाबिल. मुख़्तसर=संक्षिप्त तर=भीगा हुआ. तस्बीह=माला

ये ज़िन्दगी का मुक़द्दर है क्या किया जाए
क़ज़ा का वक़्त मुक़र्रर है क्या किया जाए

हर इक निगाह के अन्दर है क्या किया जाए
बहुत डरावना मंज़र है क्या किया जाए

हसीन से भी हसींतर है क्या किया जाए
तेरे ख़याल का पैकर है क्या किया जाए

हर एक शख़्स के दिल में है ख़्वाहिशों का हुजूम
तलब सभी की बराबर है क्या किया जाए

ये जान जिस्म से हो सकती है जुदा लेकिन
वो मेरी रूह के अन्दर है क्या किया जाए

ज़ा=मौत. मुक़र्रर=तय, निश्चित. हसींतर=अति सुन्दर पैकर=आकृति तलब=इच्छा.
हृ=आत्मा.

तुम्हारे इश्क़ की ख़ुशबू से सारे आलम में
हर इक दिमाग़ मुअत्तर है क्या किया जाए

जो गीत दारो-रसन का न गा सका कोई
वो सिर्फ़ मेरी ज़बां पर है क्या किया जाए

वो जिसके नाम से बदनाम मैं हुआ था कभी
फिर उसका नाम ज़बां पर है क्या किया जाए

वो ज़ीस्त मैं जिसे सहरा समझ रहा था 'ज़हीन'
मुसीबतों का समन्दर है क्या किया जाए

आलम=दुनिया, स्थिति. मुअत्तर=सुगन्धित. दारो-रसन=सूली और फांसी का फंदा. ज़ीस्त=जीवन.

नस्ले-आदम में सादगी भर दे
अब तो इन्सां में आजिज़ी भर दे

बिस्तरे-मर्ग पे जो लेटे हैं
उनकी सांसों में ज़िन्दगी भर दे

हम ग़रीबों के आशियानों में
मेरे मालिक तू रोशनी भर दे

भीगी-भीगी रहें मेरी पलकें
इनमें एहसास की नमी भर दे

फ़स्ले-गुल और मैं तही-दामन
मेरे दामन में भी ख़ुशी भर दे

अब तो सारा चमन शबाब पे है
पत्ते-पत्ते में सरख़ुशी भर दे

तेरे नग़मे हों क्यूं उदास 'ज़हीन'
इनकी रग-रग में शाइरी भर दे

नस्ले-आदम=आदम का क़बीला. सादगी=सीधापन. आजिज़ी=विनम्रता. बिस्तरे-मर्ग=मौत का बिस्तर. फ़स्ले-गुल=बहार का मौसम. तही-दामन=खाली आंचल. शबाब=यौवन. सरख़ुशी=ख़ुशहाली.

वो फ़ासला ही बिल-आख़िर वबाले-जां निकला
जो फ़ासला कि तेरे-मेरे दर्मियां निकला

दिल एक क़तर-ए-ख़ूं के सिवा तो कुछ भी न था
मगर ये क़तर-ए-ख़ूं वज्हे-कुन-फ़िकां निकला

वो जिसकी याद से रोशन है ज़िन्दगी मेरी
दिलो-दिमाग़ से मेरे अभी कहां निकला

फ़रेबकारियों का है ये सिलसिला देखो
बदल के भेस लुटेरों का कारवां निकला

बिल-आख़िर=आखिरकार. वबाले-जां=जान का बोझ वज्हे-कुन-फ़िकां=दुनिया के अस्तित्व का कारण.

इनायतों का तेरी देख क्या हुआ अंजाम
'चराग़े-इश्क बुझा दिल से इक धुआं निकला'

बताई किसने मेरे ग़म की दास्तां सब को
किया जो ग़ौर तो अपना ही राज़दां निकला

तुम्हारी याद जब आई तो ख़ैर-मक़दम को
हमारी आंखों से अश्कों का कारवां निकला

हर एक लम्हा उसी के ख़याल में हूं 'ज़हीन'
वो एक शख़्स ही तो मेरा हिस्ने-जां निकला

इनायतों=मेहरबानियों ख़ैर-मक़दम=स्वागत करना. हिस्ने-जां=जान का घेरा.

इस एक ज़ो'म में जलते हैं ताबदार चराग़
हवा के होश उड़ायेंगे बार-बार चराग़

जो तेरी याद में मैंने जला के रक्खे हैं
तमाम रात करे हैं वो बेक़रार चराग

ख़मोश रह के सिखाते हैं वो हमें जीना
जो जल के रोशनी देते हैं बेशुमार चराग

हर एक दौरे-सितम के हैं चश्मदीद गवाह
इसीलिए तो हैं दुनिया से शर्मसार चराग़

ज़ो'म=गुमान, गुरूर. ताबदार=चमकदार. चश्मदीद=आंखों देखा.

ज़माने भर में हमीं से है रोशनी का वजूद
उठा के सर ये कहेंगे हज़ारबार चराग़

तुम्हारे चेहरे की ताबिन्दगी के बाइस ही
मेरी निगाह में रोशन हैं बेशुमार चराग़

इन्हें हक़ीर समझने की भूल मत करना
हवा के दोश पे हो जाते हैं सवार चराग़

बुझा सके न जिन्हें तेज़ आंधियां भी 'ज़हीन'
वही तो होते हैं दर अस्ल जानदार चराग़

वजूद=अस्तित्व. ताबिन्दगी=रोशनी. बाइस=कारण. हक़ीर=तुच्छ. दोश=कंधा.

थक गए हो तो इख़्तिताम करो
ज़िन्दगी का सफ़र तमाम करो

दौरे-तश्नालबी तमाम करो
एहतमामे-सुबू-ओ-जाम करो

सहने-गुलशन में आ चुकी है बहार
कुछ तो मौसम का एहतराम करो

अपनी परवाज़ पे है जो मग़रूर
उस परिन्दे को ज़ेरे-दाम करो

इख़्तिताम=समाप्त. दौरे-तश्नालबी=प्यास का दौर. एहतमामे-सुबू-ओ-जाम=प्याले और सुराही का इन्तिज़ाम. सहने-गुलशन=बाग का आंगन. एहतराम=आदर. परवाज=उड़ान मगरूर=घमण्डी. ज़ेरे-दाम=जाल के नीचे.

वो जो जमहूरियत का दुश्मन है
उसका जीना भी अब हराम करो

ग़म के बादल तो छंट ही जायेंगे
घर में ख़ुशियों का इन्तिज़ाम करो

बेगुनाहों में हो गया शामिल
अब तो क़ातिल का एहतराम करो

कामयाबी मिलेगी तुम को 'ज़हीन'
पहले मेहनत से अपना काम करो

जमहूरियत=गणतन्त्र

गीत

तेरी फ़ुर्क़त में आह भरता हूं
मैं न जीता हूं और न मरता हूं

ज़ख़्म से मैंने दिल संवारा है
ये मुझे जान से भी प्यारा है
कल ये मेरा था अब तुम्हारा है

दिल लगाने से यार डरता हूं
मैं न जीता हूं और न मरता हूं

रोशनी तीरगी-सी लगती है
ज़िन्दगी मौत ही-सी लगती है
सांस अब टूटती-सी लगती है

अब कड़ी धूप में ठिठुरता हूं
मैं न जीता हूं और न मरता हूं

फ़ुर्कत=जुदाई. तीरगी=अंधेरा.

अपने चेहरे की ख़ामुशी दे दो
ये उदासी ये बेबसी दे दो
ये तड़प और ये बेकली दे दो

दर्दो-ग़म ही से मैं निखरता हूं
मैं न जीता हूं और न मरता हूं

मैं ग़मों की बहार देखूंगा
अपने दामन में ख़ार देखूंगा
और ज़ियादा निखार देखूंगा

ये दुआ बार-बार करता हूं
मैं न जीता हूं और न मरता हूं

बेबसी=लाचारी. बेकली=बेचैनी.

बेक़रारी का अब ये आलम है
दिल है नाशाद आंख पुरनम है
जो तेरा है वही मेरा ग़म है

और भी ग़म तलाश करता हूं
मैं न जीता हूं और न मरता हूं

वक़्त ने छीन ली ख़ुशी मेरी
कितनी सस्ती है जान भी मेरी
आइने की-सी ज़िन्दगी मेरी

हर घड़ी टूटता बिखरता हूं
मैं न जीता हूं और न मरता हूं

शादी का गीत

हमको पता था आएंगे दिन फिर बहार के
गाएंगे गीत हम भी मुहब्बत के प्यार के

आंखों में तेरी कौन है पहचानते हैं हम
बेताब है तू किसके लिये जानते हैं हम
दिन ख़त्म हो गये हैं तेरे इन्तिज़ार के
गाएंगे गीत हम भी मुहब्बत के प्यार के

तेरे लिये ज़माने की ख़ुशियां ख़रीद लूं
दामन में तेरा चांद-सितारों से भर ही दूं
अरमान दिल के पूरे हुए मेरे यार के
गाएंगे गीत हम भी मुहब्बत के प्यार के

होता है जैसे फूल का रिश्ता चमन के साथ
वैसा हो तेरी जान का रिश्ता बदन के साथ
तेरे लिए हमेशा रहें दिन बहार के
गाएंगे गीत हम भी मुहब्बत के प्यार के

सेहरे पे हर किसी की नज़र है जमी हुई
नज़रें उतारने को है बेताब हर कली
कितनी दुआओं से ये मिले दिन ख़ुमार के
गाएंगे गीत हम भी मुहब्बत के प्यार के

नज़्म शहीद भगतसिंह

ऐ शहीदे-मुल्क तू हिन्दोस्तां की जान है
मर्तबा भारत में तेरा कितना आलीशान है
गीत गाता है ज़माना जिसका वो ज़ीशान है
ऐ शुजाअत के धनी तू फ़ख्रे-हिन्दुस्तान है

मौत को समझा था तूने ज़िन्दगानी ऐ भगत
आग को तूने पिया था करके पानी ऐ भगत

तेरे आगे लरज़ा-बर-अन्दाम थी फ़ौजे-फ़िरंग
आते ही मैदां में उड़ता था तेरे दुश्मन का रंग
तेरी हिम्मत देख के हर शख़्स रह जाता था दंग
तेरी जुरअत दाद के लायक़ थी ऐ मर्दे-दबंग

तेरे आगे हौसला क्या था फ़िरंगी फ़ौज का
होश इक पल में उड़ाता था फ़िरंगी फ़ौज का

ज़ीशान=शान-ओ-शौकत वाला. शुजाअत=बहादुरी. दाद=प्रशंसा.

तेरी हिम्मत, तेरी ताक़त, तेरी सीरत का बयां
कर रहा है बच्चा-बच्चा और हर पीरो-जवां
हैं तेरे किरदार से ज़ाहिर हज़ारों ख़ूबियां
नाज़ तुझ पर कर रही है मादरे-हिन्दोस्तां

जान देकर तूने अपने मुल्क को ज़िन्दा किया
नाम दुनिया भर में हिन्दुस्तान का ऊंचा किया

किस क़दर था दिल में तेरे जज़्ब-ए-हुब्बे-वतन
तूने ही चूमा था बढ़के तख़्त-ए-दारो-रसन
दार पर चढ़ कर न आई तेरे माथे पर शिकन
मुल्क जल्द आज़ाद हो दिल में यही थी इक लगन

तूने ही तोड़ा उसे जो आहनी ज़ंजीर थी
वरना कब आसान ऐसे ख़्वाब की ता'बीर थी

शान से कहते हैं हम आज़ाद हैं आज़ाद हैं
देखकर इस मुल्क की हालत सभी नाशाद हैं
दिल तो मुर्दा हैं मगर कहने को ज़िन्दाबाद हैं
छोड़ दो कहना कि हम आज़ाद हैं आबाद हैं

ऐसा लगता है गुलामी फिर सताएगी हमें
फिर भगतसिंह की ज़रूरत पेश आएगी हमें

पीरो-जवां=वृद्ध और जवान. मादरे-हिन्दोस्तां=भारत माता. जज़्ब-ए-हुब्बे-वतन=देश प्रेम की भावना. तख़्त-ए-दारो-रसन=सूली और फांसी का तख़्ता. शिकन=झुर्री, सिकुड़न. आहनी ज़ंजीर=लोह शृंखला. नाशाद=ग़मगीन.

क़तआत

वतन परस्त समझ कर जिन्हें भी प्यार किया
उन्हीं सपूतों ने धरती को दाग़दार किया
वतन की लाज बचाई थी जिन शहीदों ने
उन्हीं शहीदों की लाशों का कारोबार किया

जाने क्यूं बदहवास रहता है
वो मेरे आस-पास रहता है
जैसे आदत-सी बन गई उसकी
ख़्वाब में भी उदास रहता है

ताज की क़द्र तो हर दौर ने पहचानी है
हुस्न और इश्क़ की दुनिया में ये लासानी है
ताज-सरताज रहेगा ये यक़ीं है हम को
आपको इसमें ज़रा भी कोई हैरानी है

आओ हम ज़िन्दगी की बात करें
ग़म की छोड़ें ख़ुशी की बात करें
मौत बर-हक़ है आएगी इक दिन
कल का क्या है अभी की बात करें

लासानी=बेमिसाल.

कुछ शे'र

उम्र भर जागता रहा हूं मैं
जी बहुत चाहता है सोने को

हमारा ख़ून-पसीना भी रंग लाएगा
है रहमतों की ये बारिश है लाख शुक्र तेरा

लो मेरे यार के सर पर भी बंध गया सेहरा
ज़माने भर की ख़ुशी आज मुझको मिल ही गई

बीज तो हम ने बोए थे ग़म के
फ़स्ल ख़ुशियों की तुम ने काटी है

हर इक नज़र पे ज़माने का सख़्त पहरा है
दिलों से रोशनी गुम है बहुत अंधेरा है

ताज़गी अब कहां फ़ज़ाओं में
हर परिन्दा फ़ज़ा से डरता है

फ़ज़ा=वातावरण

साथ रहती है मेरी मां की दुआ
रास्ते में शजर मिले न मिले

ज़िन्दगी जब भी मुसीबत का सफ़र देती है
हमको हर हाल में जीने का हुनर देती है

थोड़ी ख़ुशियों पे ऐ'तबार न कर
ग़म मुझे होशियार करता है

जज़्ब होते ही ख़ूं शहीदों का
हो गई कितनी मो'तबर मिट्टी

इक नज़र तूने जो देखा प्यार से मेरी तरफ़
मेरे हिस्से में तो दुनिया भर की दौलत आ गई

दुखों की भीड़ में उम्मीद का सहारा है
हो जैसे एक ही साथी कई क़बाओं में

करें तो किससे करें हम वफ़ाओं की उम्मीद
रखा.ही क्या है 'ज़हीन' आज की वफ़ाओं में

क़बाओं=परिधानों.

भूल सका हूं मैं कब उसको
दिल का हर इक ज़ख़्म हरा है

सूनी-सूनी अंधेरी रातों में
हम भी मिलते थे रोज़ ख़्वाबों में

ग़म की पूछो कहां-कहां न मिला
हो सुकूं जिस में वो मकां न मिला

हमने बरगद को ही उल्फ़त की निशानी माना
हम ग़रीबों से कहां ताज महल बनता है

है परवाने को उम्मीदें बहुत शम्अे-फ़रोज़ां से
वगरना आग में जलने की हिम्मत कौन करता है

जुदाई, दर्द, तड़प, बेबसी-ओ-नाकामी
मेरे अज़ीज़ मुहब्बत में और क्या होगा

अभी ज़माना है मुर्दा-ज़मीर लोगों का
पुराने लोग हुआ करते थे उसूल पसन्द

ये शे'र सिर्फ़ ख़यालात ही नहीं यारो
मेरी हयात से वाबस्ता हैं मेरे अशआर

हयात=ज़िन्दगी.